


---

Ambikastutih

——  
अम्बिकास्तुतिः

——  
Document Information



---

Text title : ambikAstutiH 1

File name : ambikAstutiH.itx

Category : devii, devI, jaina

Location : doc\_devii

Proofread by : DPD

Latest update : March 30, 2019

Send corrections to : [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 24, 2023

*sanskritdocuments.org*



अम्बिकास्तुतिः



ॐ महातीर्थरैवतगिरिमण्डने! जैनमार्गस्थिते! विघ्नभीखण्डने! ।  
नेमिनाथाङ्घ्रिराजीवसेवापरे! त्वं जयाम्बे! जगज्जन्तुरक्षाकरे! ॥ १ ॥

हीं महामन्त्ररूपे! शिवे! शङ्करे! देवि! वाचालसत्किङ्किणीनूपुरे! ।  
तारहारावलीराजितोरःस्थले! कर्णताडङ्करुचिरम्यगण्डस्थले! ॥ २ ॥

अम्बिके! हाँ स्फुरद्वीजविद्ये! स्वयं हीं समागच्छ मे देहि दुःखक्षयम् ।  
हां हूं तं द्रावय द्रावयोपद्रवान् हीं द्रुहि क्षुद्रसर्पेभकण्ठीरवान् ॥ ३ ॥

क्लीं प्रचण्डे! प्रसीद प्रसीद क्षणं ब्रूँ सदा प्रसन्ने! विधेहीक्षणम् ।  
सः सतां दत्तकल्याणमालोदये! ह्रस्वल्हूरीं नमस्तेऽम्बिके! अङ्कस्थपुत्रद्वये ॥ ४ ॥

इत्थमद्भूतमाहात्म्यमन्त्रस्तुते! कौंसमालीढषट्कोणयन्त्रस्थिते! ।  
हींयुतेऽम्बे! मरुन्मण्डलालङ्कते! देहि मे दर्शन हीं त्रिरेखवृते! ॥ ५ ॥

नाशिताशेषमिथ्यादृशां दुर्मदे! शान्तिकीर्तियुतिस्वस्तिसिद्धिप्रदे! ।  
दुष्टविद्याबलोच्छेदनप्रत्यले! नन्द नन्दाम्बिके! निश्चले! निर्मले! ॥ ६ ॥

देवि! कूष्माण्ड! दिव्यांशुके! भैरवे! दुःसहे दुर्जये! तप्तहेमच्छवे! ।  
नाममन्त्रेण निर्नाशितोपद्रवे! पाहि मामंहिपीठस्थकण्ठीरवे! ॥ ७ ॥

देवदेवीगणैः सेविताङ्घ्रिद्वये जागरूकप्रभावैकलक्ष्मीमये! ।  
पालिताशेषजैनेन्द्रचैत्यालये! रक्ष मां रक्ष मां देवि! अम्बालये! ॥ ८ ॥

अत्र स्तुतौ गुप्तीकृतो मन्त्रस्त्वेवम्-  
ॐ हीं अम्बिके! हां हीं हां हीं क्लीं ब्रूँ सः ह्रस्वल्हूरीं नमः ।  
इति अम्बिकास्तुतिः सम्पूर्णा ।



*Ambikastutih*

pdf was typeset on February 24, 2023



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

